Original Research Article Website : www.ijbasr.org ISSN : 2349-1965
International Journal of Basic & Applied Science Research
Multidiscipline and Peer Reviewed Refereed Journal 2025; 12(3); 1-5 (Special Issue)

यूरोप में राष्ट्रवाद

ब्रजेश कुमार देव
मिडिया स्टडी सेन्टर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तावना :

राष्ट्रवाद राजनीति विज्ञान का एक आधुनिक शब्द है जिसका अर्थ मुख्य रूप से एक वंश, जाति, नस्ल, भाषा इत्यादि के अनुसार एक राजनीतिक सीमा का निर्धारण कर सरकार का गठन करना है। राष्ट्रवाद का यह स्वरूप मुख्यतः 16वीं–17वीं शताब्दी में यूरोप में पनपता है तथा इसके आधार पर जर्मनी, इटली आदि देशों का एकीकरण होता है । यह आधुनिक देश का जन्म ही राष्ट्रवाद की उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । राज्य (राष्ट्र राज्य) का आधुनिक स्वरूप पूर्व के राज्य से भिन्न था, इसकी शक्ति केन्द्रीकृत, सम्प्रभू एवं अविभाजित थी । ठीक इसके विपरीत मध्ययुगिन यूरोप में राज्य विकेन्द्रीकृत विभाजित या एकल राजतंत्र के रूप में था। आधुनिक राष्ट्रराज्य में इस प्रकार का विभाजन नहीं था। इससे राष्ट्रीय राज्य की अवधारणा को और अधिक बल मिला था । (नेशनलिज्म–सुनलिनी कुमार 2008)

कूट शब्द : राष्ट्रवाद, राष्ट्रराज्य, सामानांतर, भागीदारी, आन्दोलन आदि

परिचय :

मध्यकालीन यूरोप में राजा एवं चर्च समानान्तर राज–काज में भागीदार थे। कभी सम्राट तो कभी चर्च शक्तिशाली होता था एवं राजनीतिक शक्ति का उपयोग करता था। प्रसिद्ध रोमन सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द्वारा इसाई धर्म अपनाने के बाद चर्च की शक्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ता चला गया । राजा ने यह घोषित किया कि वह ईश्वर की आशीर्वाद से जनता पर शासन करता है वहीं चर्च को भी कई कर लगाने के साथ–साथ पाप मुक्ति पत्र बेचने का भी अधिकार प्राप्त था। राजा तथा चर्च के बीच का यह संबंध एक शक्तिशाली राजतंत्र की स्थापना को अवरुद्ध कर रखा था। (पॉलिटिकल थियर : एन इन्ट्रोडक्सन–राजीव भार्गव) तत्कालीन यूरोपीय परिस्थितियाँ तथा कई कारण एक केन्द्रीकृत राज्य बनने से रोक कर रखा था ।

Corresponding Author : ब्रजेश कुमार देव
E-mail : brajeshbk108@gmail.com
Date of Acceptance : 19.07.2025
Date of Publication : 30.09. 2025

राष्ट्रवाद एक विचार धारा है जिसका उपयोग जनसंख्या को एकजुट करने तथा राज्य को एकीकृत करने के लिए किया जाता है । यहाँ राज्य के सदस्य एक संस्कृति तथा भाषा के लिए राष्ट्रवाद का प्रयोग करता है । यूरोप में राष्ट्रवाद का उपयोग रूसी एवं जर्मन साम्राज्य से लड़ने एवं स्व की जागृति के लिए विभिन्न देशों ने किया था । यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय में मुख्यतः मध्यम वर्ग का उदय एवं औद्योगिकीकरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा। (रेनन 2011) राष्ट्रवाद के लिए व्यक्तियों को अपने राष्ट्रीय समूह के हितों के साथ पहचान बनाने और उन हितों को प्रोत्साहित करने के लिए एक राज्य–एक राष्ट्र राज्य के गठन का समर्थन करने की अवश्यकता होती है। (बरादत लियोन) ।

आत्मनिर्णय और नवगठित राष्ट्रीय सरकारों ने राजशाही शक्ति और भूमि पर विदेशी नियंत्रण को पीछे छोड़ दिया । जर्मनी और इटली जैसे कुछ राष्ट्रों की स्थापना कई क्षेत्रीय गणराज्यों के संघ के माध्यम से हुई थी जिनका साझा राष्ट्रीय चरित्र था। ग्रीस, सर्बिया,

बुल्गारिया और पोलैण्ड इत्यादि में अटोमन और रूसी साम्राज्यों के खिलाफ विद्रोह के मध्यम से उभरे। राष्ट्रवाद एक वैचारिक आन्दोलन है जिसने कुछ ही दशक में यूरोप को बदल दिया था । यूरोप के देशों में राजशाही शासन और विदेशी नियंत्रण के स्थान पर आत्म निर्णय एवं नवगठित सरकारों ने ले ली ।

राष्ट्रीय राज्य की विचार का प्रथम प्रतिपादक प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक हेगल थे। फ्रांसीसी क्रांति वैसे तो गणतांत्रिक क्रांति थी परन्तु यह आधुनिक राष्ट्रीय राज्य की आन्दोलन का भी प्रारंभ था । इस क्रांति ने सम्पूर्ण यूरोप में राष्ट्रवाद के जन्म एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

यूरोप में राष्ट्रवाद का दो धारा स्पष्ट रूप से दिखता है । यथा (क) प्रांसीसी सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्र का निर्माण आम जनता के मतानुसार होना चाहिए । इस सिद्धान्त के समर्थक सामान्य कानूनी व्यवस्था के अन्तर्गत शासित होने के लिए तैयार थे । यह विचार नेपोलियन के विजय से और अधिक पुष्ट हुआ । इस विचारधारा में नेपोलियन को एक मसीहा के रूप में चित्रित किया गया । नेपोलियन ने एक स्थान पर कहा था कि, "मैं इन लोगों को एक राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करना चाहूँगा" (नेपोलियन 1815) । इस प्रकार के कई आख्यान राष्ट्रवादियों को प्रोत्साहित किया। तथा (ख) दूसरे प्रकार का राष्ट्रवाद जर्मन सिद्धान्त पर आधारित था जिसे हार्डर के लेखों ने प्रोत्साहित किया था । हार्डर ने राष्ट्रवाद को भाषा एवं कौम पर आधारित बताया था। इस विचार का मध्य एवं पूर्वी यूरोप के देश में प्रचार–प्रसार हुआ था । हार्डर का मत था कि केवल संस्थाओं एवं सार्वजनिक कल्याण से राष्ट्र नहीं बनता बल्कि राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली होना चाहिए ।

उदारवाद एवं राष्ट्रवाद दोनों में अन्तर करना कठिन था । परंतु जैसे ही उदारवाद एवं रूढ़ीवाद आमने–सामने हुआ तो दोनों का अन्तर विरोध उभर कर सामने आ गया । रूढ़ीवादियों की कोई स्पष्ट विचार धारा नहीं था जैसा कि स्पष्ट विचार धारा उदारवादियों का था। राजा, चर्च एवं अभिजात्य वर्ग जिसे सम्मलित रूप से रुढ़ीवादी कहा जाता है का विचार था कि उदारवादियों ने सामाजिक ढाँचा को तहस–नहस कर दिया है। उनका मानना था कि समाज को यंत्र की भाँती नहीं चलाया जा सकता है और न ही मानव को उन मामलों में हस्तक्षेप करना चाहिए जो उसके समझ से परे हो । रुढ़ीवादी शक्तियों में राजतंत्र का प्रमुख स्थान है जो क्रांति के बहुत बाद तक लोकप्रिय बना रहा । लोग राजतंत्र के साथ–साथ चर्च तथा पादरी वर्ग के प्रति भी सहानुभूति रखते थे । फ्रांस में सभी सम्पति चर्च को वापस करना संभव नहीं था फिर शिक्षा पर उसका अधिकार वापस किया गया तथा सरकार द्वारा कुछ अनुदान भी दिया गया । रोम में पोप सप्तम को सम्मान के साथ गद्दी पर बैठाया गया था । तीसरी महत्वपूर्ण रूढ़ीवादी शाक्ति अभिजात्यों थी । भूमि सामाजिक एवं राजनीतिक शक्ति का स्त्रोत माना जाता था । रूढ़ीवादी विचार धारा को मूर्त रूप देने में सर्वाधिक महत्व आस्ट्रीया के चान्सलर मेटरनिख ने दी । मेटरनिख स्वयं बुद्धिवादी विचार धारा को अधिक महत्त्व देता था तथा कट्टरता को अधिक महत्व नहीं देता था ।

इंगलैण्ड में फैलती हुई औद्योगिक क्रांति का प्रभाव अन्य देशों में धीरे–धीरे फैल रहा था जिसके फलस्वरुप रुढ़ीवादिता का पतन होने लगा । नए विचारधारा चारों ओर फैल रहा था तथा मध्यम वर्ग अपनी भूमिका लेने के लिए तैयार हो रहा था । सामाजिक सुधारों के विचारों के साथ–साथ राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों ने भी जड़ पकड़ ली थी। 19वीं सदी के मध्य तक दो महान शक्तियों में प्रतिद्वंद्विता सामने आई एक पुराना शासक वर्ग तथा औद्योगिक क्रांति की नई पीढ़ी जो उदारवाद का पोषाक था तथा सत्ता प्राप्ति के लिए प्रयास रत थी। वियना काँग्रेस के बाद रूढ़ीवादी शक्तियों

के विरुद्ध आन्दोलन एवं विद्रोह का क्रम बन गया । यह विद्रोह रुढीवादी शक्तियों को लगभग दबा ही दिया । राष्ट्रवाद तथा उदारवाद से प्रभावित विद्रोहों को रूढ़ीवादी द्वारा लगभग दबा दिया गया परंतु उदारवाद एवं राष्ट्रवाद का विचार लगभग बढ़ता ही गया । पुर्तगाल तथा यूनान के विद्रोह को ब्रिटेन की सहानुभूति प्राप्त होने के कारण पूर्णतः दबाया नहीं जा सका । साथ ही इन विद्रोहों को उदारवादी शक्तियों, विषेशतः उभरते हुए मध्यम वर्ग की सहानुभूति प्राप्त थी । विभिन्न देशों के क्रांतिकारी उदारवादी संगठनों में भिन्नता थी जो उन देश के सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर थी । स्पेन एवं पुर्तगाल में पश्चिमी यूरोप की भाँति एक शक्तिशाली औद्योगिक एवं व्यापारिक मध्यम वर्ग पर आधारित नहीं था। स्पेन का उदारवाद भिन्न–भिन्न सामाजिक शक्तियों का मिश्रण था जिसमें सेना के अधिकारी एवं शाही दरबार के गुट भी सम्मलित था । अर्थात् स्पने में स्वंय उदारवादी ही उदारवाद के लक्ष्य की प्राप्ति से रोके रखा था । पुर्तगाल में भी ऐसी ही स्थिति थी ।

1820 से 1830 तक के आन्दोलनों का राष्ट्रवाद के विकास पर साकारात्मक प्रभाव पड़ा। फ्रांस एवं स्पेन में सफल हस्तक्षेप के परिणामस्वरुप वहाँ पर पुराने राजवंश की पुनः स्थापना हो गई जिसने प्रतिक्रियावादी नीतियाँ लागू करनी आरंभ कर दी । ब्रिटेन ने स्पेन के उपनिवेशों के विरुद्ध अमरीका की सहायता मांगी तथा वहाँ के राष्ट्रपति मुनरो ने घोषणा की कि कोई भी शक्ति दक्षिण अमरीका की ओर देखने का साहस न करे।" इस तरह दक्षिण अमरीका के सभी स्पेनी उपनिवेश स्वतंत्र हो गए । 1825 ई० में ब्रिटेन ने मेक्सिको, कोलंबिया एवं अर्जेन्टाइना की स्वतंत्रता को स्वीकार किया । यूनान अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी । 1830 ई0 में रूस–तुर्की युद्ध के पश्चात ब्रिटेन, फ्रांस और रूस ने यूनानी स्वतंत्रता को स्वीकार किया। यूनानी स्वतंत्रता आन्दोलन लगभग सम्पूर्ण यूरोप में उदारवाद एवं राष्ट्रवाद को प्रेरित एवं स्थापित किया। राष्ट्रवादी आन्दोलन का जब रुढ़ीवादियों द्वारा दमन किया गया तो सभी उदारवादी–राष्ट्रवादी नेता विदेश में गुप्त रूप से शरण लिया था । इस दौरान अनेक बिन्दूओं पर मतभेद होते हुए भी रुढ़ीवादियों का सामना करते रहे तथा राष्ट्रवाद एवं उदारवादी आन्दोलन को जीवित रखा । इन विचारधारा को जीवित रखने के लिए गुप्त समितियाँ बनाई गई । गुप्त समितियों में इटली की कारबोनरी सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी । कुछ गुप्त संस्थाएँ भी रूढ़ीवादी विचार को पोशित करता था यथा नेपल्स एवं पीडमॉन्ट की गुप्त संस्थाएँ ।

गुप्त संस्थाओं के सदस्य रोमांचकारी लेखकों के विचारों से अधिक प्रभावित थे तथा लगभग रोमांचकारी लेखक सामंती प्रवृति के थे, फिर भी इनके लेखों से राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला । नई पीढ़ी के रोमांचकारी लेखक राष्ट्रवादी एवं उदारवादी विचार से प्रभावित थे जैसे विक्टर ह्यूगो, लामरतीन, शौली, कीट्स तथा बाइरन । इनके विचारों से राष्ट्रवाद एवं उदारवाद का विकास हुआ । इन लेखकों ने ऐसे राजनीतिक विद्रोहों का समर्थन किया जिससे मानव को मुक्ति मिले। ह्यूगो के शब्दों में स्वछंदतावाद साहित्य का उदारवाद है । इसी प्रकार के विचार को रूस के पुष्किन एवं पोलैण्ड के आदम मिकीविकज ने प्रोत्साहित किया । क्रांतिकारी एवं रोमांचकारी आन्दोलन के मध्य एक अन्य संबंध था यूनानवादी आन्दोलन । यूनानवादी आन्दोलन स्वछंदतावादियों ने चलाया था जो तुर्की के विरुद्ध यूनान के स्वतंत्रता संघर्ष से सहानुभूति रखते थे । यह आन्दोलन भी यूरोप में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया यूनानवादियों की प्रमुख उपलब्धि थी यूनान की, स्वतंत्रता जिसे रूस, ब्रिटेन तथा फ्रांस सरकार ने मान्यता प्रदान की थी । इस प्रकार हम देखते हैं कि आन्तरिक एवं बाह्य कारणों के प्रभाव से

Website : www.ijbasr.org ISSN : 2349-1965
International Journal of Basic & Applied Science Research
Multidiscipline and Peer Reviewed Refereed Journal 2025; 12(3); 1-5

यूरोपीय देशाों में राष्ट्रवादी आन्दोलन को रूढ़ीवादिता पर सफलता मिला। इन्हीं कारणों से 1820–1830 तक यूरोप के विभिन्न देशों में राष्ट्रवादी आन्दोलन प्रारंभ हुआ । प्रतिक्रियावादी शासकों के विरुद्ध प्रथम विद्रोह फ्रांस में प्रारंभ हुआ था । इस समय फ्रांस का राजा चार्ल्स दशम था जो घोर प्रतिक्रियावादी था । चार्ल्स दशम कहता था कि, "मैं अंग्रेजी राजा की भाँति शासन करने की अपेक्षा लकड़ी काटना अधिक पसंद करूँगा ।" चार्ल्स दशम् राजा के दैवीय अधिकार का समर्थक था । उसने चर्च का अधिकार बढ़ाने का प्रयास किया तथा शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति के सिद्धान्तों को हटाने का प्रयास किया । चार्ल्स की इसी रुढ़ीवादिता के कारण राष्ट्रवादियों तथा उदारवादियों को अधिक समर्थन मिला । चार्ल्स ने घबड़ाकर चार अध्यादेश जारी किया तथा निर्वाचन को भंग कर दिया। चार्ल्स दशम् के इस कदम से जनता में और अधिक आक्रोश बढ़ा और विद्रोह भड़क गया । इन विद्रोहों में सामान्य जनके साथ–साथ छात्र, पूर्व सैनिक श्रमिक तथा मध्यमवर्ग सम्मलित हुए। परिणामस्वरूप राष्ट्रवादियों ने चार्ल्स दशम को सत्ता से हटाकर लुई फिलिप को फ्रांस का शासक बनाया । इस सत्ता परिवर्तन को ईश्वर की अनुकम्पा एवं जनता की इच्छा कहा गया । इस प्रकार फ्रांस में रुढ़ीवादिता पर राष्ट्रवाद को विजय प्राप्त हुआ ।

फ्रांस की क्रांति की सफलता ने यूरोप के अन्य देशों के राष्ट्रवादियों को प्रोत्साहित किया। इसका प्रथम प्रभाव बेल्जियम के राष्ट्रवादियों पर हुआ । 1815 की संधी के अनुसार बेल्जियम की सत्ता हालैण्ड को मिला था जो पूर्णतः राष्ट्रीयता के विरुद्ध था । हालैण्ड का व्यवहार बेल्जियम के प्रति पराजित देश की तरह था । बेल्जियम के राष्ट्रवादियों को यह कहीं से पसंद नहीं था तथा वे हॉलैण्ड के शासक विलियम प्रथम के नीतियों का विरोध करना प्रारंभ कर दिया । राष्ट्रवादियों ने ब्रूसेल्स में विद्रोह किया तथा बेल्जियम को स्वतंत्र घोषित कर लिया तथा नया संविधान बनाया । हॉलैण्ड के राजा विद्रोह को दबाने का प्रयास किया परंतु उसे सफलता नहीं मिला। बेल्जियम के राष्ट्रवादियों को फ्रांस ने सैनिक सहायता देने की पेशकश की जिसे राष्ट्रवादियों न इस भय से अस्वीकार कर दिया कि इससे बेल्जियम पर फ्रांस का प्रभाव बढ़ेगा। स्विटजरलैण्ड के उदारवादियों ने २२ केंटनों में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी तथा नया संविधान लागू किया जो स्पष्टतः राष्ट्रवाद से प्रभावित था । जर्मनी के राष्ट्रवादियों ने भी जहाँ–जहाँ निरंकुश राजतंत्र कमजोर था वहाँ–वहाँ विद्रोह प्रारंभ कर दिया । ब्रान्सविक का ड्यूक सत्ता छोड़कर भाग गया तथा ड्यूक का उत्तराधिकारी राष्ट्रवादी–उदारवादी षासन एवं संविधान को स्वीकार कर लिया। बवेरिया, वेडन तथा वरहैनबर्ग में उदारवादी–राष्ट्रवादी अधिक मजबूत हुए। इतना ही नहीं समाचार पत्रों पर से भी नियंत्रण हटाया गया ।

अन्य देशों में राष्ट्रवादी आन्दोलन की सफलता से प्रेरित होकर इटली के राष्ट्रवादियों में जोश उत्पन्न हुआ। मोडेना, पारमा में विद्रोह प्रारंभ हुआ । विद्रोहियों ने पोप की राज्य में भी स्वतंत्रता की घोषणा की । पोलैण्ड में भी रूसी शासन के विरुद्ध आन्दोलन प्रारंभ हुआ । आन्दोलनकारियों ने अस्थाई सरकार बनाई । स्पेन एवं पुर्तगाल में गृह–युद्ध प्रारंभ हुआ । इंग्लैण्ड तथा फ्रांस की सहायता से दोनों देशों में राष्ट्रवादी सरकार की स्थापना हुई ।

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम देखते हैं कि यूरोप के देषो में जो राष्ट्रवादी भावना का उद्भव किसी एक कारण से नहीं हुआ । इसके पीछे राजनीतिक, सामजिक, आर्थिक इत्यादि कारण प्रमुख थे । यहाँ राष्ट्रवाद का उदय मुख्यत : फ्रांसीसी क्रांति से प्रारंभ होता है और लगभग सम्पूर्ण यूरोप को किसी न किसी रूप से प्रभावित करता है तथा सभी देशों की सरकार उदारवादी विचारधारा को परिस्थिति वष माना । यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना के परिणामतः कई छोटे–छोटे

राष्ट्र का उदय हुआ । राष्ट्रवादी भावना के विकसित होने से बाल्कान देशों में उग्र राष्ट्रीयता की भावना जागृति हुई जिसके परिणामत विश्व युद्ध हुआ । राष्ट्रवाद की भावना के फलस्वरूप कुछ यूरोपीय राष्ट्रों ने उपनिवेश की स्थापना की फलत : एशिया एवं अफ्रीका का शोषण प्रारंभ हुआ । इसी राष्ट्रवाद ने गणतंत्रीय शासन प्रणाली को परिमार्जित किया और आधुनिकता को प्रोत्साहित किया। अर्थात् यूरोप में जिस राष्ट्रवाद का विकास हुआ उसका विश्व की राजनीति पर साकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव हुआ ।

संदर्भ सूची

1. Europe in the Eighteenth Century& M-s-Anderson
2- Enlightend Despotism& Stuart Andrew
3- The Enlightenment& Norman Hampson
4- Rise of European Libralism& Harold Laski
5- The Idea of progress&Sidney Pollard
6- Unbound Prometheus&David Landes
7- Age of Progress&Frene Collins
8. यूरोप और अमरीका में राश्ट्रवाद– एस. लायड एवं क्रेमर
9. राजनीतिक विचारधाराएँरू उत्पत्ति और प्रभाव–पी. लियोन
10. द ट्रांसफॉर्मेषन ऑफ यूरोपिय पॉलिटिक्स–श्रोएडर
11. विकिपीडिया–15 नवम्बर 2024